

विदा

(खण्ड-काव्य)

उज्ज्वल नक्षत्र गगन के
कव गिर धरती पर आते ।
वे तम का भेदन करके
फिर तम में ही लुप्त जाते ॥

सुधाकर

शतदल प्रकाशन
गोरखपुर